ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292 PP. NO.- 410-411
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

दलित समुदाय एवं सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

प्रमोद कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, जितेन्द्र कुमार यादव कॉलेज, गया (बिहार), भारत

Received- 24.07.2020, Revised- 27.07.2020, Accepted - 29.07.2020 E-mail: - dr.ramnyadav@gmail.com

सारांश : अनुसूचित जाति शब्द लगभग आधी शताब्दी से प्रचलित है। पहली बार प्रयोग 1935 के भारत सरकार ने भारत सरकार/अनुसूचित जाति आदेश जारी किया था, जिसमें असम, बंगाल, बिहार, बम्बई, मध्य प्रान्त, मद्रास, उड़ीसा, पंजाब और संयुक्त प्रान्त के तत्कालीन प्रान्तों की कुछ जातियों एवं जनजातियों को 'अनुसूचित' विनिर्दिष्ट किया गया था। पहले ये जातियाँ दलित वर्ग कहलाती थी। 1931 की जनगणना में दलित वर्ग को सुव्यवस्थित ढंग से वर्गीकृत किया गया था। 1936 में जारी की गयी। अनुसूचित जातियों की सूची दलित वर्गों की पहली जैसी ही थी। 1950 में जो सूची बनायी गयी वह पहली सूची में परिवर्तन करके बनाई गयी थी। संविधान की उद्घोषणा के बाद उन सूचियों को अनुच्छेद 341 के अन्तर्गत राष्ट्रपति द्वारा अधिसूचित किया गया। इस बीच गैर सरकारी इस्तेमाल में 'हरिजन' शब्द भी काफी प्रचलित रहा। संविधान के अनुच्छेद 341 में कुछ पिछड़ी हुई जातियों और समुदायों को जो अस्पृश्यता एवं अन्य कई सामाजिक निर्योग्यताओं का शिकार थी, अनुसूचित जातियाँ घोषित किया गया था। अनुसूचित जातियों की मौजूदा सूची में कोई भी संशोधन संसदीय अधिनियम द्वारा ही किया जा सकता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि 'अनुसूचित जाति' नाम की उत्पत्ति प्रशासनिक है, न कि सामाजिक या समाजशास्त्रीय।

कुंजीभूत शब्द– अनुसूचित जाति, प्रचलित, तत्कालीन,जनजातियाँ, विनिर्दिष्ट, जातियाँ, दलित वर्ग, जनगणना।

दलितों या अनुसूचित जातियों के कल्याण एवं संरक्षण के लिए संविधान में अनेक प्रावधान किए गए। संवैधानिक प्रावधानों का लाभ उन्हें मिला परिणामस्वरूप उनके सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति में सुधार एवं परिवर्तन हुआ है।

दलित समुदाय पर न केवल संवैधानिक प्रावधानों का प्रभाव पड़ा बल्कि नगरीकरण, औद्योगिकरण, संचार के साधनों, संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण, शिक्षा राजनीतिक जागरूकता, विकास योजनाओं इत्यादि ने भी उनकी पूर्ववत स्थिति को परिवर्तित करने में योगदान दिया है। दलित समुदाय में शिक्षा का तेजी से विकास हुआ है। शिक्षा के दलित समुदाय के अनेक लोगों को उच्च पदों तक पहूँचा दिया है। आज वे विभिन्न सामाजिक समस्याओं पर अपने विचार को प्रस्तुत करने में सक्षम है।

अध्ययन का उद्देश्य – प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं जैसे बाल विवाह, जीवन साथी के चयन का आधार, अन्तर्जातीय विवाह, विधवा पुनर्विवाह, विवाह विच्छेद, दहेज प्रथा, संयुक्त परिवार, धार्मिक स्थल में अराधना, कर्मफल में विश्वास, धार्मिक अंधविश्वास, जादू–टोना एवं तन्त्र–मन्त्र में विश्वास के प्रति दलितों के दृष्टिकोण को ज्ञात करना है।

उपकल्पनाएँ – (1) दलितों में बाल विवाह का प्रचलन कम होना। (2) दलित लोग जीवन साथी के चयन में जाति को प्रमुखता देते हैं। (3) दलित लोग अन्तर्जातीय विवाह के पक्षधर नहीं हैं, लेकिन सवर्ण जाति में विवाह के पक्ष में है। (4) दलितों में दहेज का प्रचलन बढ़ रहा है।

अध्ययन का क्षेत्र –प्रस्तुत अध्ययन का समग्र गया जिला का बोध गया प्रखण्ड के दलित गाँव हैं ।

निदर्शन–बोध गया प्रखण्ड के दलित गाँवों में से विनोवा नगर, मॉमा, तुरी, जयसिया टोला तथा घोषिया गाँव का चयन किया गया है । चयनित गाँवों से 100 दलित लोगों का चयन उत्तरदाता के रूप में किया गया ।

तथ्य संकलन के स्त्रोत – प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्यों का संकलन किया गया। प्राथमिक तथ्यों का संकलन अनुसूची की सहायता से तथा द्वितीयक तथ्यों का संकलन समस्या से सम्बद्ध ग्रंथों से किया गया।

प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण (तालिका संख्या–1)

	कथन	हाँ	नहीं	योग
1.	क्या आप बाल विवाह के पक्ष में हैं ?	[illegible]	40	100
2.	आप जीवन साथी के चुनाव में जाति को [illegible] मानते हैं ?	[illegible]	[illegible]	100
3.	क्या आप अन्तर्जातीय विवाह के पक्ष में हैं ?	[illegible]	[illegible]	100
4.	क्या आप विधवा विवाह के पक्ष में हैं ?	[illegible]	[illegible]	100
5.	क्या आप विवाह–विच्छेद के पक्ष में हैं ?	[illegible]	[illegible]	100
6.	क्या दहेज लेना चाहिए ?	[illegible]	[illegible]	100
7.	क्या संयुक्त परिवार [illegible] विवाह को प्रोत्साहन देता है ?	[illegible]	[illegible]	100
8.	क्या धार्मिक स्थलों पर नियमित आराधना करने के लिए जाते हैं ?	[illegible]	[illegible]	100

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

प्रस्तुत तालिका के आंकड़ों का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि वे बाल विवाह के पक्ष में है। 40 प्रतिशत उत्तरदाता बाल विवाह के पक्ष में नहीं है। 75 प्रतिशत उत्तरदाता जीवन साथी के चुनाव में जाति के मजबूत आधार मानते हैं तथा 25 प्रतिशत उत्तरदाता मजबूत आधार नहीं मानते। 21 प्रतिशत उत्तरदाता अन्तर्जातीय विवाह के पक्ष में है तथा 79 प्रतिशत उत्तरदाता इसके पक्ष में नहीं हैं 90 प्रतिशत उत्तरदाता विधवा विवाह के पक्ष में हैं तथा 10 प्रतिशत उत्तरदाता इसके पक्ष में नहीं हैं। 20 प्रतिशत उत्तरदाता विवाह विच्छेद के पक्ष में हैं तथा 80 प्रतिशत इसके विपक्ष में हैं। 75 प्रतिशत उत्तरदाता दहेज के समर्थक हैं, जबकि 25 प्रतिशत उत्तरदाता दहेज प्रथा के विरोधी हैं। 81 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि संयुक्त परिवार सामान्यतः कलह और विग्रह को प्रोत्साहन देता है। 45 प्रतिशत दलित समाज के लोग धार्मिक स्थलों पर नियमित अराधना करने के लिए जाते हैं।

तालिका संख्या–2

कथन	हा	नहीं	योग
1. क्या आप कर्मफल में विश्वास करते हैं ?	88	12	100
2 क्या आप धार्मिक अंधविश्वासों में विश्वास करते हैं ?	89	11	100
3. क्या आप अन्तर्जातीय विवाह के पक्ष में हैं ?	70	10	100

उपर की तालिका के तथ्यों से ज्ञात होता है कि 88 प्रतिशत उत्तरदाता कर्मफल में विश्वास करते हैं। 12 प्रतिशत उत्तरदाता कर्मफल में विश्वास नहीं करते हैं। 89 प्रतिशत उत्तरदाता धार्मिक अंधविश्वासों में विश्वास करते हैं। 11 प्रतिशत उत्तरदाता इसमें विवास नहीं करते। 70 प्रतिशत उत्तरदाता जादू–टोना एवं तन्त्र–मन्त्र में विश्वास करते हैं तथा 10 प्रतिशत उत्तरदाता इसमें विश्वास नहीं करते।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि दलित समुदाय के लोग विभिन्न सामाजिक समस्याओं के कप्रिति जागरूक हैं क। उत्तरदाता बाल विवाह के पक्षधर हैं। वे कहते हैं कि इसके द्वारा समाज में यौन सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के विकृतियों का समाधान हो जाता है। उत्तरदाताओं में से बहुत से उत्तरदाता इसके पक्ष में नहीं है। दलित समुदाय में जीवन साथी के चयन में जाति को प्रमुखता दी जाती है। इनके यहाँ अन्तर्जातीय विवाह को पसन्द नहीं किया जाता दलित समाज में विधवा विवाह को स्वीकृति दी जाती है। लेकिन विवाह–विच्छेद को अच्छा नहीं माना जाता। दलित समाज में दहेज प्रथा का प्रचलन बढ़ने के कारण दलितों में निर्धनता में वृद्धि तथा ऋणग्रस्तता कलह एवं दोष का कारण मानते हैं। दलितों की एक बड़ी संख्या धार्मिक स्थलों पर अराधना करने के लिए जाते हैं। अशिक्षा अभी भी दलितों में व्याप्त हैं। इनमें धार्मिक अंधविश्वास भी पाया जाता हैं। ये लोग जादू–टोना, तन्त्र–मन्त्र का भी उपयोग करते हैं।

अतः दलित समुदाय पर जनसंचार के विभिन्न माध्यमों का प्रभाव पड़ रहा है और वे जागरूक भी हो रहे हैं, परन्तु शिक्षा, निर्धनता आदि के कारण इस स्तर के जागरूकता का प्रसार नहीं हो रहा है, जिसका अपेक्षा की जाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आहूजा राम (2000) : भारतीय समाज, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर ।
2. अमर नाथ (2010) : दलितों की राजनीति में सहभागिता अप्रकाशित शोध–प्रबंध, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वारणसी ।
3. गुरू जी (1997) : 'दलित कल्चर' मूवमेंट एण्ड डायलैटिक ऑफ दलित पॉलिटिक्स इन महाराष्ट्र', विकास अध्ययन केन्द्र, मुम्बई ।
4. पांडेय, पी.एन. (1988) : 'एजुकेशन एंड सोशल मोबिलटी अमंग शिड्यूलड कास्ट्रस', रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली ।
5. हांगो, जी. (2005) : अनरयेबल सिटीजन; दलित मूवमेंट एंड डिमोक्रैटाइजेशन इन तमिलनाडू, सांग, नई दिल्ली ।

*****

ISSN - 2582 - 3612

سہ ماہی ساغرِ ادب مظفرپور

یو۔جی۔سی۔کیئر لسٹ جرنل

جلد: ۴ شمارہ: ۱۵

(اکتوبر تا دسمبر ۲۰۲۲ء)

مدیر اعلیٰ

پروفیسر سید آل ظفر

سہ ماہی ساغرِ ادب مظفرپور
Vol. : 04, Issue : 15
October to December 2022
پروفیسر (ڈاکٹر) سید آل ظفر
مدیر اعلیٰ

RNI No. BIH URD/2019/78036
ISSN - 2582 - 3612

Vol. : 04, Issue : 15
October to December 2022

Quarterly

SAGHAR E ADAB

Muzaffarpur

(UGC CARE - List Journal)

Chief Editor (Honorary)

Prof. (Dr.) Syed Alay Zafar

UNIVERSITY DEPTT. OF URDU
B. R. A. BIHAR UNIVERSITY
MUZAFFARPUR - 842 001 (BIHAR)
MOB. +91 94300 84261, +91 90062 53903

NO BRANCH Ph.: 2303206

سونے اور چاندی کے گارنٹی شدہ زیورات

خزانہ جوئیلرس

مرادپور، پٹنہ ۴

Khazana JEWELLERS

MURADPUR, PATNA - 4

پروپرائٹر: محمد صابر و محمد یٰسین

With best Compliments from

Namaz-e-Eidain Committee

Gandhi Maidan, Patna

ARIF MAHBOOB (Member)

MAHMOOD ALAM (President)

ISSN : 2582 - 3612

سہ ماہی

ساغرِ ادب
مظفرپور

(یو۔جی۔سی۔کیئر لسٹ جرنل)

جلد : ۴ شمارہ : ۱۵

اکتوبر تا دسمبر ۲۰۲۲ء

مُدیرِ اعلیٰ (اعزازی)

ڈاکٹر سیّد آلِ ظفر

پروفیسر

پوسٹ گریجویٹ شعبۂ اُردو

بی۔آر۔اے۔بہار یونیورسیٹی، مظفرپور

بہار (انڈیا)

R.N.I. No. : BIHURD/2019/78036

Quarterly

SAGHAR E ADAB

Muzaffarpur

(UGC CARE - List Journal)

جلد : ۴ شمارہ : ۱۵ اکتوبر تا دسمبر ۲۰۲۲ء

مُدیرِ اعلیٰ (اعزازی) : پروفیسر سیّد آلِ ظفر مُدیرہ : کہکشاں یاسمین

زرِ تعاون

فی شمارہ : 400 روپے، سالانہ 1,300 روپے (بذریعہ رجسٹرڈ ڈاک)، تاحیات 15,000 روپے، دیگر ممالک 60 ڈالر

صفحات : ۵۰۴

تعداد اشاعت : ۵۰۰

سرِ ورق : سیّد آلِ محتشم، سیّد آلِ حاشر و فائزہ ظفر

کمپوزنگ : امام الدین امام، مظفرپور۔ 43783 62061 91+

Bank Details

SAGHAR E ADAB, Saving A/c No. 37510 50251

IFSC : CBIN 0284935

Central Bank of India, L.S. College Branch, Muzaffarpur (Bihar) India

اس شمارے کے قلم کاروں کی آراء سے ''ساغرِ ادب'' کے مُدیر کا متفق ہونا ضروری نہیں۔

کسی بھی قابل اعتراض تحریر یا دیگر متنازعہ معاملات کی قانونی چارہ جوئی صرف مظفرپور عدالت ہی میں ہوگی۔

خط و کتابت و ملنے کا پتہ

CHIEF EDITOR

SAGHAR E ADAB

Husaina House, Zakaria Colony, Mohalla - Sadpura

P.O. - Ramna, Muzaffarpur - 842 002 (Bihar) India

Mob. +91 94300 84261, +91 90062 53903

Scanned with OKEN Scanner

فہرست

نمبر شمار	رشحاتِ قلم	اربابِ قلم	صفحہ نمبر
۱	اداریہ	پروفیسر سیّد آلِ ظفر	۸
۲	حمد پاک	پروفیسر فاروق احمد صدیقی	۱۲
۳	نعت پاک	سید اسلم صدا آمری	۱۳
۴	شہریار کی غزل گوئی	پروفیسر محمد علی جوہر	۱۴
۵	آغا حشر کاشمیری بحیثیت ڈرامہ نگار	پروفیسر محمد کاظم	۱۹
۶	اردو صحافت کا معتبر نام: گوپال متّل	ڈاکٹر افسر کاظمی	۲۹
۷	نیر مسعود کا افسانہ ''عطر کافور'': ایک مطالعہ	ڈاکٹر نصرت فاطمہ	۳۶
۸	قمر اعظم ہاشمی کا ناقدانہ شعور	ڈاکٹر محمد رئیس	۴۲
۹	کبیر کی آفاقیت	ڈاکٹر نصرت جہاں	۴۶
۱۰	جمال الدین عرفی شیرازی: سبک ہندی کا نمائندہ شاعر	ڈاکٹر تسنیم کوثر چشتی	۵۲
۱۱	کلام میر میں انسانی نفسیات کے عناصر	ڈاکٹر ناظم حسین خان	۵۹
۱۲	مثنوی کی تعریف	ڈاکٹر چمن لعل بھگت	۶۲
۱۳	شمیم حنفی کی تخلیقی تنقید: ایک مطالعہ	ڈاکٹر مجاہد الاسلام	۶۵
۱۴	مصری ادیب عبدالوہاب عزّام کا ۱۹۴۷ کا سفرنامۂ ہند.....	ڈاکٹر ثمامہ فیصل	۷۱
۱۵	ظہور الدین اور ان کی شاعری	ڈاکٹر محمد آصف ملک	۷۸
۱۶	میں نے اِن سے جینے کا سلیقہ سیکھا!	اظہار خضر	۸۸
۱۷	کلیم الدین احمد ابوذر عثمانی کی نظر میں	احسن امام احسن	۹۳
۱۸	''فائر ایریا'': ایک اجمالی جائزہ	محمد ضیاء الحق	۱۰۰
۱۹	افسانہ ''پرندہ پکڑنے والی گاڑی'' فن کے آئینے میں	ڈاکٹر بسم اللہ خان	۱۰۶
۲۰	حافظ محمود شیرانی: فارسی ادب کا ایک منفرد ہندوستانی نقاد	ڈاکٹر واحد الزمان	۱۱۱
۲۱	دارا شکوہ کی رباعی گوئی: ایک تجزیہ	ڈاکٹر شاہ باز عامل	۱۱۹
۲۲	ناول ''بے جڑ کے پودے'': فن کے آئینے میں	ڈاکٹر کیوڑ لال بیروا	۱۲۵
۲۳	فراق گورکھپوری کا شعری آہنگ	ڈاکٹر صوفیہ پروین	۱۲۹

ISSN : 2582 - 3612 UGC CARE - List Journal

LIST OF EDITORIAL BOARD

1. **Prof. Abuzar Usmani**
Ex. Head
University Deptt. of Urdu
Vinoba Bhave University, Hazaribagh

2. **Prof. Najmul Hoda**
Ex. Head
University Deptt. of Urdu
B.R.A.Bihar University, Muzaffarpur

3. **Prof. Alimullah Hali**
Ex. Head
University Deptt. of Urdu
Magadh University, Bodh Gaya

4. **Prof. Farooque Ahmad Siddiqui**
Ex. Head
University Deptt. of Urdu
B.R.A.Bihar University, Muzaffarpur

5. **Prof. Rais Anwer**
Ex. Head
University Deptt. of Urdu
L. N. Mithila University
Darbhanga

6. **Prof. Hameed Suharwardy**
Ex. Chairman
Deptt. of Urdu & Persian
Gulbarga University
Gulbarga (Karnataka)

7. **Prof. K. Habeeb Ahmed**
Head
Deptt. of Arabic, Persian & Urdu
University of Madras
Marina Campus, Chennai

8. **Prof. Qamrul Hoda Faridi**
Deptt. of Urdu
Aligarh Muslim University
Aligarh
(U.P.)

9. **Prof. Manzer Hussain**
Ex. Head
University Deptt. of Urdu
Ranchi University, Ranchi

10. **Dr. Amir Mustafa Siddiqui**
Ex. Head
University Deptt. of Urdu
Vinoba Bhave University, Hazaribagh

ویب سائٹ

www.saghareadab.in

ای میل

saghareadab@gmail.com

syedalayzafar@gmail.com

اس دائرے میں سرخ نشان کا مطلب ہے کہ آپ کی مدّت خریداری ختم ہو چکی ہے۔
اگر اگلے سال کا زرسالانہ آپ سے موصول نہیں ہوا تو یہ سمجھا جائے گا کہ آپ آگے خریدار بنے رہنا نہیں چاہتے ہیں۔
(مدیر اعلیٰ)

ایڈیٹر، پرنٹر، پبلشر و پروپرائٹر لیس کہکشاں یاسمین نے انڈین آرٹس آفیسٹ، بیسمنٹ آف اسٹیٹ بینک آف انڈیا، مہندرو، پٹنہ میں چھپوا کر دفتر ''ساغرِ اَدب''، حسینا ہاؤس، زکریا کالونی، محلّہ۔ سعد پورہ پوسٹ۔ رَمنہ، مظفرپور۔ 842 002 (بہار)، انڈیا سے شائع کیا۔

مُدیر اعلیٰ (اعزازی) : پروفیسر سیّد آلِ ظفر

Scanned with OKEN Scanner

۲۴	اقبال سہیل کی غزلوں کے مختلف رنگ	ڈاکٹر محمد شہنواز عالم	۱۳۴
۲۵	پروفیسر حافظ محمود خاں شیرانی بحیثیت محقق.....	محمد مرغوب عالم	۱۳۸
۲۶	نسیم حجازی بحیثیت ناول نگار۔ایک مطالعہ	ڈاکٹر شہباز انصاری	۱۴۳
۲۷	ڈاکٹر عزیز اللہ شیرانی کے افسانوں میں سماجی مسائل	ڈاکٹر انکا کماری	۱۴۹
۲۸	مولانا ابوالکلام آزاد اور فارسی زبان وادب	ڈاکٹر عبدالواسع	۱۵۷
۲۹	چیل، چوزے اور چنار۔کیا حقیقت کیا فسانہ!	ڈاکٹر توصیف احمد ڈار	۱۶۳
۳۰	ترقی پسند تحریک اور اعتراضات: ایک جائزہ	ڈاکٹر مقصود انصاری	۱۶۸
۳۱	آزادی کے بعد اُردو نظم	محمد عارف	۱۷۳
۳۲	سہیل واسطی کی شاعرانہ عظمت	ڈاکٹر وصی احمد شمشاد	۱۸۰
۳۳	جھارکھنڈ کی تہذیب وثقافت کا امین: ایم۔ایم۔ناگپوری	ڈاکٹر محمد حذیفہ	۱۸۶
۳۴	اردو اخبار ورسائل میں مزاحیہ کالم نگاری کی اہمیت	ڈاکٹر ناظرین فاطمہ	۱۹۴
۳۵	غالب کی شاعری میں سائنسی تصورات	ڈاکٹر عبدالرحیم	۱۹۹
۳۶	۱۹۹۰ء کے بعد کی غزلیہ شاعری	ڈاکٹر اعجاز احمد	۲۰۳
۳۷	میر کی شاعری کا فنی وفکری جائزہ	ڈاکٹر شگفتہ یاسمین	۲۰۹
۳۸	سعید پریمی کے افسانے	ندیم احمد	۲۱۳
۳۹	علامہ اقبالؒ کے فارسی اشعار میں تخیل اور مضمون آفرینی	ڈاکٹر سیّد شافی	۲۱۷
۴۰	معاشرے میں خواتین کے کردار اور مسائل۔۔۔۔	ڈاکٹر صالحہ پروین	۲۲۲
۴۱	علی احمد فاطمی کی سردار شناسی	ڈاکٹر کہکشاں عرفان	۲۲۹
۴۲	ڈاکٹر عبدالرزاق فاروقی کی خاکہ نگاری	ڈاکٹر سید سمیع الدین	۲۳۴
۴۳	ترقی پسند ناقدین میں پروفیسر ممتاز حسین کا مقام ومرتبہ	ڈاکٹر نازیہ سنبل	۲۴۱
۴۴	ارتضیٰ رضوی کی نعتیہ شاعری	ڈاکٹر شبنم پروین	۲۴۸
۴۵	ساغر نظامی بحیثیت نظم نگار	ڈاکٹر رعنا کوثر	۲۵۲
۴۶	دلتوں کے سلگتے مسائل کی داستان	ڈاکٹر سنتوش کمار ''جے ہند''	۲۵۸

(گوشۂ ریسرچ اسکالرس)

۴۷	شہناز نبی کی شاعری میں تانیثی آہنگ	انیل کمار	۲۶۵
۴۸	مظفر حنفی کی وضاحتی کتابیات: ایک جائزہ	محمد خوشتر	۲۷۱

۴۹	کووڈ-۱۹ اور اُردو افسانہ	مبینہ بی	۲۸۰
۵۰	سہم نثر نویسانِ ہند در گسترش زبان وادبیات فارسی	غلام جیلانی	۲۸۷
۵۱	مشتاق احمد وانی کے افسانوی مجموعے ''آج میں کل تو'' پر ایک نظر	سلیمہ اختر	۲۹۱
۵۲	تاریخ نگاری کی اہمیت	مکیش کمار	۲۹۸
۵۳	مولانا ابوالکلام آزاد بحیثیت صحافی	عائشہ صدیقہ	۳۰۲
۵۴	نیّر مسعود بحیثیت محقق	محمد رضا	۳۰۸
۵۵	ترقی پسند اردو غزل میں ساحر لدھیانوی کی انفرادیت	صفدر علی	۳۱۳
۵۶	علی گڑھ تحریک اور سرسیّد کے تصورات	شبیر احمد ڈار	۳۱۸
۵۷	اقبال انصاری کا ناول ''آکیلی'' میں نسوانی احتجاج کا جائزہ	پنکج کمار	۳۲۵
۵۸	احمد مشتاق کی شاعری میں ہجرت کا کرب	ندیم حسین	۳۳۳
۵۹	بہار کے اردو اخبارات کا نمایاں کردار	محمد معتصم باللہ	۳۳۷
۶۰	علی جواد زیدی غزل کے آئینے میں	نازیہ خاتون	۳۴۲
۶۱	ترنم ریاض کی شاعری میں سماجی مسائل کی عکاسی	آصف پرویز	۳۴۶
۶۲	مولانا ابوالکلام آزاد کی صحافتی خدمات	محمد اسلم	۳۵۵
۶۳	طبقاتی کشمکش کی المیائی کہانی: ''کمزور پودا''	سنجے کمار	۳۶۰
۶۴	آزادی کے بعد راجستھان میں اردو غزل	سوپال چودھری	۳۶۵
۶۵	افسانہ ''رضو باجی'' اردو ادب کا کلاسک	ارشد حسین	۳۷۱
۶۶	انیسویں صدی میں فارسی کے جمہور علمائے بنارس.....	شاداب حسین	۳۸۰
۶۷	دہلی امیر خسرو کی شاعری میں	محمد شہنواز عالم	۳۸۳
۶۸	اختر پیامی کی نظم نگاری	امینہ خاتون	۳۸۹
۶۹	اردو میں افسانہ نگاری کی روایت اور غیاث احمد گدی	محمد صفی الرحمٰن	۳۹۵
۷۰	صدیق مجیبی کی غزل گوئی کا تجزیاتی مطالعہ	اشفاق عالم	۴۰۰
۷۱	ش۔اختر کی تنقیدی نگاری پر اِک نظر	محمد عزیز الرحمٰن	۴۰۵
۷۲	سلام سندیلوی کی تنقید نگاری	صبیحہ پروین	۴۱۰
۷۳	بہار میں اردو نعتیہ شاعری	محمد اظہر الحق	۴۱۴
۷۴	شاد اور ان کی رباعی نگاری	زرینہ خاتون	۴۱۹

Scanned with OKEN Scanner

۷۵	قرۃ العین حیدر کا ناول آگ کا دریا ایک تجزیاتی مطالعہ	محمد ثناء اللہ	۴۲۳
۷۶	فیض احمد فیض کی انقلابی شاعری	محمد امام الدین	۴۲۷
۷۷	اردو کے غیر مسلم نعت گو شعرا: ایک جائزہ	محمد اطہر حسین	۴۳۳
۷۸	جیلانی بانو اور ان کی ناول نگاری	مہوش جبیں	۴۳۸
۷۹	شوکت حیات کی افسانہ نگاری	مظہر الکبریاء صدیقی	۴۴۳
۸۰	ڈپٹی نذیر احمد۔ تعلیمِ نسواں کے علمبردار	نور الاسلام	۴۴۸
۸۱	جدید نظمیہ شاعری اور مناظر عاشق ہرگانوی	عشرت جہاں بیگم	۴۵۲
۸۲	صبا نقوی کی غزلوں کا رنگ و آہنگ	شبیر عالم	۴۵۶
۸۳	خواجہ میر درد اور ان کی صوفیانہ شاعری	محمد محبوب عالم	۴۶۰
۸۴	قیصر صدیقی بحیثیت غزل گو شاعر	محمد علاء الدین	۴۶۴
۸۵	بحیثیت غزل گو مومن کا مقام و مرتبہ	محمد قاسم	۴۶۹
۸۶	علی سردار جعفری کے نثری کارنامے	آصفہ رحمن	۴۷۳
۸۷	اُسلوب نثر میں یکتا: خواجہ احمد عباس	ناہید پروین	۴۷۶
۸۸	شاعرِ بغاوت: احمد فراز	راحت آفریں	۴۷۹
۸۹	پروفیسر محمد مجیب: مورخ ادیب	فوزیہ خاتون	۴۸۲
۹۰	مشتاق احمد یوسفی بحیثیت مزاح نگار	ارشاد عالم	۴۸۵
۹۱	ظفر عدیم کی شعری انفرادیت	ریاض احمد	۴۸۸
۹۲	ساجدہ زیدی کی ڈرامانگاری	تبسم آرا	۴۹۱
۹۳	محسن کاکوروی کی رباعی گوئی کا تنقیدی جائزہ	مجتبیٰ حسن صدیقی	۴۹۶
۹۴	''ساغرِ ادب'' کا چودھواں شمارہ (آپ کی نظر میں)		۵۰۱

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

اداریہ

آپ کے اس ہر دل عزیز سہ ماہی جریدہ ''ساغرِ ادب'' کا ابتدائیہ ایک ایسے ادیب شہیر سے منسوب کرنے کی ضرورت ہو رہی ہے جنہوں نے تقریباً چار سال پہلے یعنی ۲۷ر دسمبر ۲۰۱۸ء کو اس دنیائے فانی سے منھ موڑ لیا۔ چونکہ یہ شمارہ اکتوبر تا دسمبر ۲۰۲۲ء سے تعلق رکھتا ہے، اس لئے دسمبر کے مہینے کو ان کی رحلت کا مہینہ قرار دینے پر پروفیسر حامدی کاشمیری کی ذات و شخصیت، ادبی حیثیت اور قد و قامت اور تنقید و تخلیق میں ان کے بیش بہا تجربوں کی وقعت اور قدر و قیمت کے بارے میں یہ سطور پیش کرنا مناسب بلکہ انسب نظر آتا ہے۔

پروفیسر حامدی کاشمیری کا نام دیکھ کر ہی ان کی علاقائی وابستگی کا پتہ چل جاتا ہے۔ یہ غور طلب ہے کہ وہ کشمیری نہیں کاشمیری لکھتے تھے۔ ان کے آباواجداد بھی خطۂ کشمیر سے تعلق رکھتے تھے۔ ان کا نام حبیب اللہ تھا۔ قلمی نام انہوں نے حامدی کاشمیری اختیار کیا۔ والد خواجہ محمد صدیق بٹ ایک صوفی بزرگ تھے۔ صوفیانہ اور درویشانہ مزاج حامدی صاحب کے بزرگوں کا ورثہ تھا۔ ان کی تاریخ پیدائش ۲۹ر جنوری ۱۹۳۲ء بتائی گئی ہے۔ انہوں نے میٹرک ۱۹۴۸ء میں، بی۔اے (آنرز) فارسی ۱۹۵۲ء اور ایم۔اے انگریزی ۱۹۵۴ء میں کشمیر میں ہی رہ کر امتیازات کے ساتھ پاس کیا۔ اس سے پتہ چلتا ہے کہ فارسی کے بعد ان کی دلچسپی انگریزی سے ہوئی۔ پھر ایم۔اے اردو ۱۹۵۸ء میں پنجاب یونیورسٹی سے کیا گویا وہ کشمیر سے باہر نکلے اور ۱۹۵۹ء میں انگریزی ہی میں تدریس کی ڈگری لی جو Central Institute of English حیدرآباد سے تفویض ہوئی۔ غالباً اس کا کوئی مرکز پنجاب یونیورسٹی میں تھا۔ ۱۹۶۶ء میں کشمیر یونیورسٹی سے ''جدید اردو نظم اور یورپی اثرات'' پر پی ایچ۔ڈی کی ڈگری ملی۔ شادی ۲۹ر اکتوبر ۱۹۶۳ء کو کشمیر ہی کے ایک معزز خاندان میں مصرہ مریم سے ہوئی۔ اولادیں دو ہوئیں ایک بیٹا مسعود عالم جو کمپیوٹر انجینئر ہوا، (پیدائش ۱۹۶۵ء) اور ایک بیٹی صبا حامدی جو انگریزی میں پی ایچ۔ڈی ہوئی۔ (پیدائش ۹ر اگست ۱۹۶۶ء)۔

پوری زندگی تدریس کے مختلف عہدوں پر فائز رہ کر ملازمت کے دوران اور اس سے سبکدوش ہونے کے بعد بھی علمی و ادبی مشاغل میں گزارے۔ متعدد علمی اور معزز اداروں کے رکن رہنے کے دوران ساہتیہ اکادمی، نئی دہلی کی مجلس عاملہ اور بھارتیہ گیان پیٹھ ایوارڈ کی اردو ایڈوائزری کمیٹی کے رکن اور Convenor بھی دوبارہ رہ چکے ہیں۔ بہت سارے انعامات و اعزازات حاصل کئے جو مختلف اداروں کی جانب سے انہیں ملے۔ باہر کی یونیورسٹیوں میں نیشنل اردو یونیورسٹی، حیدرآباد اور جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی

Scanned with OKEN Scanner

امینہ خاتون

اختر پیامی کی نظم نگاری

اختر پیامی ایک اہم فن کار ہیں جن کی نظمیہ شاعری عوامل کے مابین معنی دریافت کرتی ہے۔ اختر پیامی کے تجربے اور مشاہدے نے عصر کی اشیا کے درمیان رشتہ ڈھونڈا ہے۔ اور فن کا جداگانہ اور منفرد نمونہ اردو ادب میں پیش کیا ہے۔ اختر پیامی کی آواز کی بے باکی اور لہجہ کی شدت اور خنکی ان کی پہچان کا پہلا پتھر ہے۔

اختر پیامی کی شاعری اجتماعی جبر سے آزادی حاصل کرنے اور سیلن زدہ معنویتوں کو رد کرنے کی نئی جہت ہے۔ ان کی نظموں میں معنویت کا اسم تلاش کیا جا سکتا ہے اور تشکیک سے یقین کے سفر کو جانچا پرکھا جا سکتا ہے۔ اختر پیامی کے یہاں نظموں کی بنت اور اس کا لہجہ بالکل نیا ہے اور وہ امیجز متشکل ہوتے ہیں جو کبھی حسّاتی، کبھی فکری و عقلی اور کبھی خواب ناک یعنی لاشعوری اور تحت الشعوری بن کر سامنے آتے ہیں۔ ان کی نظموں میں نئی شعری لسانیات، نفسیاتی باریکی اور ایمائی حسن سے نمو پاتی ہے اور ہمیں متاثر کرتی ہے۔

اختر پیامی بہ حیثیت شاعر اپنے عصر کی پیداوار ہیں۔ ان کی شاعری اپنے عہد اور ماحول کی ترجمان ہے۔ گرچے انھوں نے ماضی کی روایتوں کو بھی برتا ہے۔ لیکن بدلتے ہوئے حالات کے تقاضے کو خصوصی طور پر پورا کیا۔ ان کی شاعری بدلتے ہوئے ماحول کا ساتھ دیتی ہے۔ ادب زندگی اور ماحول کے مزاج اور اُفتادِ طبع کے زیرِ اثر پیدا شدہ مختلف رُجحانات کی آغوش میں پرورش پاتا ہے۔ اس لیے یہ زندگی کا اٹوٹ حصہ ہے۔ اسے کسی حال میں ایک دوسرے سے جُدا نہیں کیا جا سکتا۔ زندگی کی پیچیدگیوں اور نیرنگیوں کا عکس ادب میں پڑتا ہے۔ اور ماحول کی تبدیلی اور زندگی کے میلانات اور رُجحانات کا اثر فن کار کے ذہن و دل کی تبدیلی کی صورت میں ظاہر ہوتا ہے۔ بدلتے ہوئے حالات کے سبب فن کار کے افتاد، احساسات اور نفسیات میں تبدیلی آتی ہے اور سماجی و سیاسی حالات غیر شعوری طور پر ادبی شخصیت سے ہم آہنگ ہو کر خود بہ خود ادبی تخلیق میں بالواسطہ ادبی طریقے سے ادب میں اپنا اظہار کرتے ہیں۔ اختر پیامی بیسویں صدی کے شاعر ہیں۔ ہندوستانی تاریخ میں ان کی شاعری ایک نئے موڑ کی نشان دہی کرتی ہے۔ انگریزی تہذیب و تمدن ہندوستان پر سایہ فگن ہوتا جا رہا تھا۔ انگریزوں کے قدم یہاں کی سرزمین پر مستحکم ہو رہے تھے۔ جس سے نظامِ حیات پسپا اور مردہ ہو کر رہ گیا تھا۔ انگریزوں کے لیے یہ فتح خوشیوں کے خزانے سمیٹ کر لائی۔ اس خوشی کا

اظہار انھوں نے قتل و خوں ریزی سے کیا۔ بے اطمینانی کے حالات نے سیاست اور ادب میں نئی نئی تحریکوں کو جنم دیا۔ جن کے علم برداروں نے اخلاقی اور مذہبی احیا کی کوششیں کی۔ راجا رام موہن رائے نے بنگال میں برہما سماج کی بنیاد ڈالی۔ جس کا مقصد ہندو مذہب کو فرسودہ رسم و رواج اور توہم پرستی سے باہر نکالنا تھا۔ پنجاب میں دیانند سرسوتی نے اپنی تحریک کے ذریعے ہندو مذہب سے خرافات کو دور کرنے کی کوشش کی۔ ان تحریکوں نے ہندو قوم کو بیدار کیا۔ ہندوؤں کے ساتھ مسلمانوں کی تحریک قاسم نانوتوی وغیرہ جیسے افراد کی قیادت میں گامزن تھا جس کا مقصد صحیح اسلامی اصولوں کا قیام تھا۔ ۱۹۰۶ء میں مسلم لیگ کا بھی قیام عمل میں آ گیا اور ملک میں دو مختلف مزاج کی پارٹیوں میں تقسیم ہو گیا۔

اسی زمانے میں ہوم رول اور عدم تعاون جیسی تحریکیں بھی شروع ہوئیں جن کا اثر اس زمانے کے لوگوں پر پڑنا ضروری تھا۔ گاندھی جی کی سِوِل نافرمانی کی تحریک بھی اسی دور میں منظرِ عام پر آئی۔ اسی کو آگے چل کر ستیا گرہ کی شکل میں قومی پہچان ملی۔ عدمِ تعاون کی تحریک نے پورے ملک میں ایک ہیجان کی کیفیت طاری کر دی۔ حکومت اور سیاسی کارکن بلا واسطہ ایک دوسرے سے بھڑ گئے۔ حکومت نے اس تحریک کا زور کم کرنے کے لیے بہت ہی جارحانہ رویہ اختیار کرتے ہوئے اپنی پالیسی کے تحت نعرہ بلند کرنے والی عوام، لیڈروں اور اخبار نویسوں کو قید بند کی سزا دی گئی۔ جس کے ردِ عمل نے اس تحریک کو عوامی صورت اختیار کرنے کا موقع ملا۔

پہلے پہل انگریزی سرکار سے اس کی سرپرستی میں ہندوستان کو ایک آزاد ملک کے طور پر پہچان دلانے کا مطالبہ کیا گیا لیکن عوام جس طرح اپنا جوش و خروش دکھا رہی تھی اس کے سامنے یہ مطالبہ اب کم تر نظر آنے لگا اور مکمل آزادی کے نعرے بلند ہونے لگے اور تیزی سے سب کے دلوں میں اثر کرنے لگے جس سے اس مانگ کو کافی تقویت حاصل ہوئی۔

یہ اور اس طرح کے حالات برصغیر ہندو پاک اور بنگلا دیش میں اپنا اثر ڈال رہے تھے۔ غرض برِصغیر ہندو پاک کے سیاسی، سماجی اور اقتصادی حالات اور معاملات کی یہ صورتِ حال رہی کہ ادب چوں کہ اپنے عہد اور ماحول کے ساتھ ارتقائی منازل طے کرتا ہے اس لیے زندگی سے ہی مواد فراہم کرتا ہے۔ اردو ادب پر بھی اِن سیاسی اور سماجی تبدیلیوں کا اثر پڑا۔ ۱۹ ویں صدی کے وسط تک اردو میں قابلِ قدر شعری سرمایہ جمع ہو چکا تھا۔ لیکن اردو شاعری کا ایک بڑا حصہ خیالی مضامین پر مشتمل تھا اور حسن کا معیار دراصل طرزِ ادا اور زبان و بیان تھا۔ شعرا کے سامنے ادب کی تخلیق کا کوئی سماجی، سیاسی، تعلیمی اور اصلاحی مقصد نہ تھا۔ ان کے موضوعات زیادہ تر عشق و محبت اور تصوف تھے۔

اختر پیامی نے حالات کی سنگینی سے گھبرا کر راہِ فرار اختیار کرنے سے گریز کیا اور اسی تخریب کے

Scanned with OKEN Scanner

اندھیرے میں انھوں نے روشنی کو تلاش کرنے کی خو اپنائی اور آنے والے دنوں میں مثبت پہلوؤں کی عکاسی کی۔ وہ اپنے ہم عصر شاعروں کی طرح چیختے چلاتے نہیں ہیں۔ نعرے بازی سے پرہیز کرتے ہیں اور غلامی کی سختی سے بھی ان کے قدم ڈگمگاتے نہیں ہیں۔ بلکہ سہل انداز میں انگریز حاکموں سے مخاطب ہو کر اپنی ذہنی ناآسودگی اور طلب کو یوں ظاہر کرتے ہیں۔

اب سامراجیوں کی ضرورت نہیں رہی — اب آپ کے اصول سے الفت نہیں رہی
وعدوں پہ اعتبار کی چاہت نہیں رہی — ہندوستاں کو آپ کی حاجت نہیں رہی
پھر بھی ہمیں فریب دیے جا رہے ہیں آپ

(برطانوی مہمانوں سے)

قومی اور ملکی انتشار کرب اور اضطراب کے ساتھ زندگی کی نئی بشارتوں اور نئی فضاؤں نیز نئے امکانات کا ذکر اختر پیامی بڑے شدّ و مد کے ساتھ کرتے ہیں لیکن اندازِ بیان میں لہجہ دھیما ہے۔

جب گھٹا ٹوپ سی بدلی چھا کر
کچھ برستی ہوئی کھل جاتی ہے
اور سوکھی ہوئی ندی میں اُبال آتا ہے
اور لہروں کی تموج کا خیال آتا ہے
گندگی جھاگ سے لپٹی ہوئی بہہ جاتی ہے

ہاں اُسی طرح سے جینے کے لیے
اپنے آزاد تصور کی بقا کی خاطر
جب غلاموں کا لہو اُمڈے گا
پسلیاں آہنی سنگین سے ٹکرائیں گی
گندی جھاگ سے لپٹی ہوئی بہہ جائیں گی

(جھاگ)

اختر پیامی کی نظموں میں جذبے کی آفاقیت فکر بن کر سامنے آتی ہے۔ انھوں نے روایتی انسان کے تصوّر میں انقلاب لانے کی بھرپور کوشش کی ہے۔ وہ سرِ تسلیم خم کرنے کے بجائے غلامی سے نجات حاصل کرنے اور حالات کو قبضے میں لینے کی ترغیب دیتے ہیں۔ اور انگریزی حکومت کو متنبہ کرتے ہیں اور سیاسی اور قومی شعور کو روشن کرنا چاہتے ہیں۔ انھوں نے نعرے بازی اور شاعری میں واضح فرق رکھا ہے۔ ان کے

یہاں زندگی اور حقائق کے اوراق میں تہہ داری ہے۔ زندگی کے ظالمانہ خاموشی اور انگریزوں کے بے جا تسلط پر ان کی آواز بے باک اور احتجاج کھلا ہوا ہے۔ دراصل اختر پیامی نارسائی کی واپسی چاہتے ہیں اور چمکتی ہوئی صبح کے انتظار میں ہیں۔

تم مرے پاؤں میں زنجیر پہنا سکتے ہو
تم مری فکر کی پرواز کہاں روکو گے
منتشر ہیں مرے نغمے بھی شرارے کی طرح
مری چونکی ہوئی آواز کہاں روکو گے

مجھ سے کہتے ہو کہ میں زہر کا بیوپاری ہوں
میں نے سوکھے ہوئے حلقوں میں بھی امرت ٹپکائے
میں نے کب فرقہ پرستی کی ہوا پھیلائی
تم نے دیکھا کہیں چاند نے شعلے برسائے

ان کے یہاں ہم عصر سماج کی دھڑکن پورے آب و تاب کے ساتھ نمایاں نظر آتی ہے اور خارجی واقعات کے سلسلے سے صاف صاف اشارے ملتے ہیں جن کی وجہ سے ان کے لہجے میں لطیف رمزیہ انداز اور رزمیہ حزن جاں گزیں ہے۔ اختر پیامی کا ماننا ہے کہ زمانہ ہمیشہ تغیر پسند رہا ہے۔ نیرنگی و انقلاب ان کی فطرت میں شامل ہے۔ وہ جوانوں سے بھی مخاطب ہوتے ہیں اور کہتے ہیں کہ ایک نیا نقش، نئی تہذیب اور نیا زاویۂ حیات قایم کرنے کی کوشش کرو اور زوال آمادہ بہاروں اور روایتوں کے روبرو نئے مناظر کی کرشمہ سازی کرو:

جوان ہو تو زندگی کی نبض گدگدا تو دو
جوان ہو تو وقت کی سیاہیاں مٹا تو دو
یہ آگ لگ رہی ہے کیوں اسے ذرا بجھا تو دو

(ابھی تو میں جوان ہوں)

اختر پیامی ملک کی آزادی کے جذبے کے ساتھ ملت کی آزادی کا احساس بھی اپنے کلام میں نمایاں کرتے ہیں۔ ملک کی آزادی کے بعد ہر طبقے کے لوگوں کے احساسات اور ان کا اجتماعی پن اور آسودہ اور خوش حال ہونے کی تمنا اور نئے راستوں اور نئی منزلوں کی تلاش کی عکاسی اختر پیامی نے اس طرح کی ہے۔

آج ہونٹوں پہ تبسم کے اشارے دوڑیں — آج ٹھہرے ہوئے جذبات کے دھارے دوڑیں
آج عذراؤں کی تخئیل کے مارے دوڑیں — کہہ دو موسم سے بدل جائیں نظارے، دوڑیں

Scanned with OKEN Scanner

اختر پیامی نئی زندگی کے نئے عناصر کے مطالعہ سے ملک وقوم کے لوگوں کے اندر بصیرت وسعی و پیکار کی نئی تحریک پیدا کرنا چاہتے ہیں۔ خام اور صحیح مؤثرات سے غلط اثر قبول کرنے اور صحیح اور صحت مند ذہن سے خوش آیند اور زندگی بخش تصوّرات کی نشان دہی کرتے ہیں۔

اختر پیامی کے یہاں دوسرے ترقی پسند یا اس تحریک سے متاثر شعرا کی طرح سیاسی، سماجی شعور پس منظر میں موجود ہے۔ زندگی، وطن اور آزادی کا ذکر جن نظموں میں انھوں نے کیا ہے وقتی سیاسی وسماجی تحریکات کے اثرات کے غلط نتائج کا احساس شدّت سے سامنے آیا ہے۔ ان کی بے اطمینانی ان کے خیالات کی اسی وجہ سے آئینہ دار ہے۔

اختر پیامی نے زندگی کو اس کی خرابیوں کے ساتھ قبول کیا ہے۔ اسی لیے معاشرتی زندگی کے دکھوں کے ساتھ ان کا رشتہ جذباتی اور تاثراتی ہونے کے بہ جائے حقیقت پسندانہ ہے :

''میں بڑی حد تک جذباتی رہا ہوں۔ جذبات کے بغیر تو شاعری ممکن بھی نہیں ہے۔ ترقی پسند تحریک کے ابتدائی دور میں جن لوگوں نے بہار میں انجمن ترقی پسند مصنّفین کی شاخ قایم کی ان میں تین نوجوان پیش پیش تھے، انور عظیم، اختر پیامی اور شاہد انور۔ رجعت پسند قوتیں ہم سب کے خلاف تھیں پھر بھی لگن اور امید کے سہارے یہ تحریک کامیابی سے ہم کنار ہوئی۔

میری شاعری کا ایک حصّہ سیاسی نوعیت کا ہے۔ بیسویں صدی کی تیسری چوتھی دہائی میں جب سیاسی نظریات تیزی سے بدل رہے تھے اور ادب پر ان کی پرچھائیاں صاف نظر آرہی تھی اس وقت کوئی بھی باشعور انسان اس سے متاثر ہوئے بغیر نہیں رہ سکتا تھا۔ میں نے بھی طالب علمی کے زمانے میں ایسی بہت سی نظمیں لکھی ہیں جن کے موضوعات خالص سیاسی ہیں۔ موجودہ نسل کو ان محرکات کا شاید علم بھی نہ ہو۔

میری آنکھوں نے ہندوستان کو تقسیم ہوتے ہوئے دیکھا۔ ان ہی آنکھوں نے پاکستان کو ٹوٹتے ہوئے بھی دیکھا ہے۔ میری نسل کے بہت سے لوگ اس الم ناک تجربے سے گزرے ہوں گے۔ ان تبدیلیوں نے میرے ذہن کو تقریباً مفلوج کر دیا ہے۔ کیا شعر وادب کے ذریعہ انسانی جبلّت کو بدلا جاسکتا ہے۔ میں اکثر اپنے آپ سے سوال کرتا ہوں۔

مجھے گاؤں بہت پسند تھے۔ اکثر سوچتا تھا کہ زندگی کے آخری دن

اپنے گاؤں کی پُرسکون فضا میں گزاروں گا۔ اس وقت میں فطرت سے قریب تر ہوں گا۔ مگر زندگی مجھے ایک بہت بڑے شہر میں لے آئی ہے۔ یہ انسان نما عفریتوں کا جنگل ہے۔ دنیا کے سارے بڑے شہر ایسے ہی ہوتے ہیں۔ حرص وہوا اور بددیانتی دنیا کے تمام شہروں کا مقدر ہے۔

('کلس'، ص۔۲۱-۲۰)

زندگی کے جس دور کے طرزِ فکر اور طرزِ احساس کا مظہر اختر پیامی کی نظمیں ہیں وہ قریب کی زندگی سے تعلق قایم کرنے اور رشتہ جوڑنے کی اہمیت سے متعلّق ہیں۔ ٹھہری ہوئی فضا اور دھیمی ونرم رفتار میں وہ واقعات کو نظم کا روپ دیتے ہیں۔ ان کا رشتہ اعتدال اور ہمواری سے ہے۔ ماحول انھیں متاثر کرتا ہے، اور اس کے اجتماعی اثر سے خود کو متاثر ہوتے ہیں۔ اور یوں ماحول اور شاعر دونوں ایک دوسرے کو ایک نئی صورت دینے کے مسلسل عمل میں مصروف رہتے ہیں۔ ماحول اور اس میں رہنے والے انسان کے درمیان حالات کے اضطراب اور انتشار نے جو اضطراری کیفیت پُر ہیجان تعلق پیدا کیا تھا، اس میں استواری اور ہم واری پیدا کرنے، اپنے عہد کے اثرات کا نقش بن جانے اور ماضی کے معاشرتی اور تہذیبی اثرات کو قبول کرنے کا دخل بہت گہرا ہے۔ اختر پیامی نے عمل اور ردِّ عمل کی نفسیاتی تحلیل اور تحت الشعور کی گہرائی میں جا کر اس کے طرزِ عمل کی توجیہہ میں جس نفسیاتی موشگافی سے کام لیا ہے اور یہی ان کی نظم نگاری کو دیگر افراد سے منفرد بناتی ہے۔

Ameena Khatoon
Research Scholar
Deptt. of Urdu
Nilamber Pitamber University
Medininagar
Palamu (Jharkhand)
Mob.- 88095 26804

Scanned with OKEN Scanner

sabaqeurdu.com
ISSN-2321-1601
UGC CARE LISTED MONTHLY JOURNAL
جنوری ۲۰۲۳
JANUARY 2023

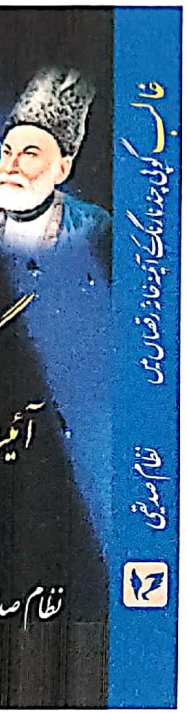

Regd. with the RNI No.:
UPURD/2016/67444
ISSN-2321-1601
SABAQEURDU
VOLUME: 8, ISSUE: 1
JANUARY 2023
M.:9919142411,9696486386
WhatsApp: 9696486386
Price per copy: 200/-

عالیجناب اے۔رحمٰن

राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परिषद् قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان

National Council for Promotion of Urdu Language

Ministry of Education, Department of Higher Education, Government of India

Farogh-e-Urdu Bhawan, FC-33/9, Institutional Area, Jasola, New Delhi-110025

Ph: 011-49539000, Fax: 011-49539099, Website: www.urducouncil.nic.in, E-mail: director@ncpul.in

Azadi Ka Amrit Mahotsav

26 جنوری یومِ جمہوریہ مبارک

قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان حکومت ہند کی سرگرمیاں

- 2022 میں قومی اردو کونسل سے شائع ہونے والے رسائل کو 11,14,398 قارئین تک پہنچا کر نیا ریکارڈ قائم کیا گیا۔
- قومی اردو کونسل نے 23-2022 میں وانمباڑی مسلم ایجوکیشنل سوسائٹی کے اشتراک سے صوبہ تمل ناڈو کے وانمباڑی میں 3 تا 11 جنوری 2023 میں تاریخی اردو میلے کا انعقاد کیا جو کہ اب تک کا جنوبی ہندوستان کا سب سے زیادہ کامیاب میلہ رہا۔
- قومی اردو کونسل نے ڈائریکٹوریٹ ڈسٹنس ایجوکیشن کے اشتراک سے اردو اساتذہ کی پیشہ ورانہ ترقی پر ایک پانچ روزہ ورکشاپ 22-18/ جولائی 2022 کو کشمیر یونیورسٹی میں منعقد کیا۔
- قومی اردو کونسل نے آن لائن 'یک روزہ بین الاقوامی طرحی مشاعرہ' 11/ اگست 2022 کو منعقد کیا۔
- قومی اردو کونسل نے 'مہاتما گاندھی کے لسانی اساس کی تلاش: قیام افریقہ کے دوران اردو کے متعلق ان کے نظریے کی تشکیل' کے موضوع پر 30/ ستمبر کو ایک مذاکرہ کا انعقاد کیا۔
- قومی اردو کونسل نے اجمل فاؤنڈیشن، ہجائی، آسام اور مسلم کونسل دیما پور کے اشتراک سے ناگالینڈ کے اسکولوں، کالجوں، مدارس اور این جی اوز کے نمائندوں کے ساتھ یک روزہ انٹریکٹیو پروگرام 6/ نومبر 2022 کو منعقد کیا۔
- قومی اردو کونسل نے 'مولانا ابوالکلام آزاد کی میراث' کے موضوع پر 10/ نومبر 2022 کو ایک مذاکرہ کا انعقاد کیا۔
- قومی اردو کونسل نے 'ہندوستانی ریاستوں کا انضمام اور آئین ہند' کے موضوع پر 24 نومبر 2022 کو ایک مذاکرہ کا انعقاد کیا۔
- قومی اردو کونسل نے وجے واڑہ اور اس کے آس پاس کے متعلقین اردو کے ساتھ یک روزہ انٹریکٹو پروگرام اور CGDC کے کامیاب طلبا کے لیے تقسیم اسناد کا پروگرام وجے واڑہ، آندھرا پردیش میں 12/ دسمبر 2022 کو منعقد کیا۔
- قومی اردو کونسل کا آدھے گھنٹے کا ہفتہ وار ٹیلی ویژن پروگرام 'اردو دنیا' ہر سنیچر کو دوپہر 1.30 بجے اور ہر اتوار صبح 10:30 بجے نیوز 18 جموں/کشمیر/لداخ/ ہماچل پر ٹیلی کاسٹ ہوتا ہے۔ اس پروگرام میں اردو زبان و ادب، تہذیب و ثقافت کی نمائندگی کرنے والی تقریبات کی جھلکیاں، قومی کونسل کی خبریں اور وزارت تعلیم کی اقلیتوں سے متعلق تعلیمی اسکیموں وغیرہ کی معلومات فراہم کی جاتی ہیں۔
- قومی اردو کونسل کی اسکیم 'تھوک خریداری کتب، رسائل و جرائد' کے تحت مالی سال 23-2022 میں تقریباً ایک کروڑ 19 لاکھ روپے کی اردو، عربی اور فارسی کتب و جرائد کی خریداری عمل میں آئی جن میں 348/ اردو کتابوں کے ساتھ 13 عربی و فارسی کتابیں اور 62 رسائل و جرائد شامل ہیں۔
- 'مالی تعاون اسکیم برائے اشاعت مسودات' کے تحت کونسل نے مالی سال 23-2022 میں 364 مصنفین کو تقریباً ایک کروڑ 64 لاکھ روپے کی مالی امداد فراہم کی۔
- 'مالی تعاون اسکیم برائے سیمینار، کانفرنس اور ورک شاپ' کے تحت کونسل نے مالی سال 23-2022 میں 248 رضا کار تنظیموں/اداروں کو تقریباً ایک کروڑ 60 لاکھ روپے کی مالی معاونت کی۔
- قومی اردو کونسل نے اپنے اشاعتی پروگرام کے تحت مالی سال 23-2022 میں اب تک مختلف موضوعات پر 50 کتابیں اور نصاب کی 39 کتابیں شائع کی ہیں۔ اس طرح کونسل کی مجموعی تعداد اشاعت 1493 سے متجاوز ہے۔
- سہ ماہی رسالہ 'فکر و تحقیق' کا ارتکاز تحقیقی موضوعات پر ہے۔ علمی و ادبی حلقوں میں یہ علمی و تحقیقی مجلہ قدر و منزلت کی نگاہ سے دیکھا جاتا ہے۔ اس میں کلاسیکی ادب، عالمی ادبیات، معاصر ادبی تحریکات و رجحانات پر مضامین شائع کیے جاتے ہیں۔ سالانہ زرتعاون 100 روپیہ ہے۔
- ماہنامہ 'اردو دنیا' ادب، سماج، ثقافت، سائنس، ٹکنالوجی اور دیگر عصری موضوعات پر مشتمل ایک مکمل مجلہ ہے جس کے قارئین کا ایک بڑا حلقہ ہے۔ 'اردو دنیا' کے خصوصی شماروں کو بھی ادبی حلقوں میں بے حد پسند کیا گیا۔ اس رسالے کا سالانہ زرتعاون 150 روپے ہے۔
- ادب اطفال کو فروغ دینے کے لیے قومی اردو کونسل کا باتصویر رسالہ 'بچوں کی دنیا' آج صرف ہندوستان ہی نہیں بلکہ پوری دنیا میں بچوں کا مقبول ترین رسالہ ہے۔ اس رسالہ میں بچوں کی ذہنی اور تحریری تربیت کے علاوہ دل چسپی کا سارا مواد موجود ہے۔ سالانہ زرتعاون 100 روپیہ ہے۔
- قومی اردو کونسل نے آدھی آبادی کے جذبات و احساسات کے ترجمان کے طور پر ماہنامہ 'خواتین دنیا' کا آغاز مارچ 2017 سے کیا ہے۔ خواتین سے متعلق اہم ایشوز پر مضامین کثرت سے شائع کیے جاتے ہیں۔
- ekitaab کے نام سے کونسل نے ایک موبائل ایپ تیار کروایا ہے۔ اس ایپ کے ذریعے کونسل کی کتابوں کو موبائل، ٹیب لیٹ اور آئی پیڈ پر پڑھا جا سکتا ہے۔ آپ اس ایپ کو اپنے موبائل میں Play Store یا App Store کی مدد سے آسانی سے ڈاؤن لوڈ کر سکتے ہیں۔
- کونسل نے اردو کتابوں کا آن لائن مطالعہ کرنے کے لیے ایک ای لائبریری ویب سائٹ www.urdu-elibrary.com بھی تیار کروائی ہے۔ اس پلیٹ فارم کے ذریعے کونسل کی کتابوں کا Unicode میں مطالعہ آپ اپنے کمپیوٹر پر آسانی کے ساتھ کر سکتے ہیں۔
- کونسل نے اپنی ویب سائٹ www.urducouncil.nic.in کو اردو پورٹل میں تبدیل کروایا ہے۔ اب محبان اردو اس پورٹل کے ذریعہ اردو کتابوں، اردو مضامین، ڈکشنری و اردو سیکھنے کے علاوہ بہت سی چیزوں کا فائدہ اٹھا سکتے ہیں۔
- کشمیر میں پیپر میشی کے ہنر کو اردو کے ذریعے سیکھنے اور فروغ دینے کے لیے چھ مہینے کے کورس کو باقاعدہ ایک اسکیم کے طور پر منظوری دے دی ہے۔ جسے HCSSC,NewDelhi کے تعاون سے چلایا جا رہا ہے۔
- فن خطاطی کے فروغ کے لیے قومی اردو کونسل کیلی گرافی و گرافک ڈیزائن کا تربیتی کورس چلاتی ہے۔ اس وقت کیلی گرافی و گرافک ڈیزائن کے 71 مراکز مختلف صوبوں میں قائم ہیں۔
- "BOOKS ON WHEEL" پروگرام کے تحت قومی اردو کونسل دور دراز علاقوں میں موبائل وین کے ذریعے قاری سے اپنا رشتہ استوار کرتی رہی ہے۔ کونسل کی موبائل وین اب تک ملک بھر کے 56 دورے مکمل کر چکی ہے۔

ڈاکٹر شیخ عقیل احمد

ڈائرکٹر

سبق اردو

ایڈیٹر، پرنٹر، پبلشر: محمد سلیم | سرنامۂ سرورق : عادل منصوری | جلد:۸، شمارہ: ۱ | جنوری ۲۰۲۳

موبائل:9919142411 | سرورق : دانش الٰہ آبادی | Net Banking:SABAQ -E-URDU(MONTHLY)

واٹس ایپ:9696486386 | کمپوزنگ : دانش الٰہ آبادی، اہل قلم | IFSC BARB 0 GOPI BS A/C28240200000214

sabaqeurdu@gmail.com | مطبع: عظیم انڈیا پرنٹنگ پریس، سنت روی داس نگر، بھدوہی | Bank of Baroda, Branch: Gopiganj

فی شمارہ: -/200، زرتعاون: -/1000 | زرتعاون خاص: -/2000، اعزازی تعاون: -/5000 | Gopiganj-221303,Dist.Bhadohl,UP,INDIA

کسی بھی تحریر سے ادارہ کا متفق ہونا لازمی نہیں ہے۔ کسی بھی معاملے کی سنوائی صرف ضلع س۔ر۔ن۔ (بھدوہی) ہی کی عدالت میں ہوگی۔ ادارہ

چیف ایڈیٹر — دانش الٰہ آبادی

دانش	اداریہ	۱
غضنفر	فضائے پرسکوت میں ادائے گرد باد	۵
ندیم احمد	فراق کی غزل اور روایت کا معاملہ	۷
پروفیسر زیبا محمود	علامہ اقبال کا تخلیقی انفراد	۱۰
مریم مختار	ساقی فاروقی کی نثری خدمات	۱۳
ڈاکٹر زین العابدین	رشید احمد صدیقی بحیثیت طنز و مزاح نگار	۱۷
محمد جسیم الدین	اردو ناول ۲۱ ویں صدی میں: ایک جائزہ	۲۳
تبسم پروین	خواتین کے اہم ناولوں کا موضوعاتی جائزہ	۲۵
ڈاکٹر ارشاد الرحمٰن ملک	نعمت خان عالی کی مزاح نگاری	۲۹
عبدالرزاق	حاجی حسن علی حسن کی شاعرانہ عظمت	۳۳
ڈاکٹر محمد شمس الحسن خان	احمد رضا خاں کی نعت گوئی	۳۶
محمد اکبر حسین	نعیم صدیقی :ایک ہمہ گیر شخصیت اپنی تصانیف کے آئینے میں	۳۹
ڈاکٹر عیسیٰ محمد	افسانہ،، پہلا خط،، کا مطالعہ	۴۱
نگہت پروین	جیلانی بانو کے افسانوں میں عہد حاضر کے مسائل کی پیش کش	۴۴
اعجاز احمد لون	مجتبیٰ حسین اپنے خاکوں کے آئینے میں	۴۶
عبداللہ	خاندان سید عبداللطیف لاابالی رحمتہ اللہ علیہ کی فارسی خدمات۔	۴۹
آفاق احمد میر	اسلام میں معذور افراد کے حقوق: ایک علمی تجزیہ	۵۱
زرین فاطمہ	سرسید احمد خاں بحیثیت محقق	۵۳
مدثر احمد راتھر	ڈاکٹر شمس کمال انجم بحیثیت نعت گو شاعر (بلغ العلیٰ بکمالہ کے آئینے میں)	۵۶

Scanned with OKEN Scanner

آشنا زبیر	حلقہ ارباب ذوق کے نمائندہ شعراء کا تعارف	۵۸
ڈاکٹر تبسم	راجد یو کی امرائی ایک تجزیاتی مطالعہ	۶۱
ڈاکٹر الطاف احمد شیخ	حجاب کی تحیر خیز دنیا	۶۴
داؤد احمد ڈار	عبدالاحد آزاد بحیثیت ایک عظیم کشمیری انقلابی شاعر	۶۵
ڈاکٹر صالحہ صدیقی	شموئل احمد فکر و فن کے آئینے میں	۶۸
پروفیسر خالد مبشر ظفر اور محمد الطاف لون	''کشمیری افسانے'' تراجم شدہ مجموعہ کے چند افسانوں کا تنقیدی جائزہ	۷۰
داؤد احمد ڈار	''کشمیری شاعری میں تصوف کا رنگ''	۷۳
مقالہ نگار عابد یوسف	امین کامل کاشمیری: زبان وادب میں مقام	۷۵
ڈاکٹر بشریٰ بانو	ترقی پسند ادبی تحریک	۷۷
ڈاکٹر بشریٰ بانو	منشی پریم چند کفن کے آئینے میں	۸۱
ڈاکٹر محمد یونس بٹ	کشمیری ایک ہر دلعزیز زبان	۸۴
سمیع الدین	قاضی عبدالستار: بحیثیت تاریخی ناول نگار	۸۶
محمد سالم	صادق ہدایت بیسویں صدی میں ایرانی معاشرے کا بے باک ناقد	۹۱
شہباز ارشد	بنگال میں اردو ڈراما: ایک تحقیقی جائزہ	۹۵
رومی جان	محمد دین فوق بحیثیت کشمیری مورخ	۹۹
حسن اقبال	گوپی چند نارنگ کی حیات وخدمات کا اجمالی جائزہ	۱۰۲
ڈاکٹر اطیع اللہ	مولانا آزاد کا ذہنی ارتقاء	۱۰۶
داؤد احمد ڈار	''عبدالاحد آزاد کا پیغام انسانیت کے نام''	۱۰۸
ڈاکٹر فاطمہ خاتون	''منفرد لب ولہجے کا شاعر: اشک امرتسری ''	۱۰۹
غلام مصطفیٰ	''غالب کی جمالیات: شکیل الرحمٰن کی نظر میں''	۱۱۳
حسین مہدی	مبانی وحدت اسلامی: سید ضیاء الدین نوراللہ بن شریف حسینی مرعشی شوشتری	۱۱۷
رؤف احمد میر	معاصر اردو ناول کے تہذیبی واخلاقی سروکار	۱۲۰
معین الدین	کرشن چندر کی ناول نگاری	۱۲۱
اعلم شمس	مرزا داغ دہلوی	۱۲۳
حارث حمزہ لون	عصمت چغتائی کا جہانِ ادب	۱۲۴
فیضان حیدر	مولانا ابوالظفر ندوی اور ان کا ''سفرنامہ برہما''	۱۲۹
بشریٰ خان	فورٹ ولیم کالج کی اردو خدمات پر ایک نظر	۱۳۲
رام اگرہ	اردو میں دلت ادب کا شاہکار! دو یہ بانی	۱۳۵
مضمون نگار: رافعہ ولی	عصمت چغتائی کے یہاں عورت ''جنس'' کے آئینے میں	۱۳۷
ڈاکٹر محمد شاکر	'مانک موتی' اور رتن سنگھ کی افسانچہ نگاری	۱۴۰
ڈاکٹر اسماء عزیز	فرہنگ نویسی کا آغاز وارتقاء	۱۴۳
ڈاکٹر محمد کاشف	اسباب بغاوت ہند: جنگ آزادی کا پہلا سنگ میل	۱۴۹
حبیب الرحمٰن	الیاس احمد گدی کے افسانوں میں حقیقت نگاری	۱۵۳
فائزہ عباسی	شمس الرحمٰن فاروقی کے کئی چاند تھے سرِ آسماں میں سرسید کی دہلی	۱۵۵
امینہ خاتون	ہجرت کا المیہ اور اختر پیامی	۱۶۰
شبنم بانو	اردو میں سفرنامہ نگاری: ایک جائزہ	۱۶۲

Scanned with OKEN Scanner

ڈاکٹر مسرت حزہ لون	ساحر لدھیانوی۔عوام کے دلوں پر راج کرنے والا شاعر	۱۶۴
ڈاکٹر امتیاز احمد وانی اور ڈاکٹر اکومرتھی ناگیشور راؤ	اُردو میں سماجی علوم کی تدریس اور خواتین: مسائل و امکانات	۱۶۶
ڈاکٹر بشیر احمد شاہ	ڈاکٹر محمد زمان آزردہ بحیثیت تنقید نگار و محقق	۱۷۰
ڈاکٹر الطاف حسین	خواتین: حقوق، مسائل و امکانات	۱۷۳
یسری، سہیل	سوکھی ٹہنیوں پر ہریل	۱۷۴
ڈاکٹر ای۔محمد انور حسین	حقوق انسانی اور اخلاقی قدریں	۱۷۵
عبدالباری	اردو نثر میں طنز و مزاح کی روایت	۱۷۸
آسیہ مصطفیٰ	انقلابی شاعری کی ابتداء ارتقاء اور اس کی صنفی خصوصیات	۱۸۱
ڈاکٹر عابد گلزار	انقلابی شاعری کی ابتداء ارتقاء اور اس کی صنفی خصوصیات	۱۸۱
بلال احمد بیگ	عباس محمود العقاد بحیثیت سوانح نگار	۱۸۵
معین حارث انصاری	گورکھپور کی دبستانِ شاعری میں علیم حسرت کا مقام	۱۸۹
ناظمین ملک	قرۃ العین حیدر کے ناولوں میں تصور وقت	۱۹۲
محمد فرقان عالم	بایوگرافیا لٹریریا (Biographia Literaria) اور کولرج (Colrigde) کا نظریہ ادب و نقد	۱۹۴
ڈاکٹر اعجاز حسین شاہ	''اودھ پنچ'' طنز و مزاح کا معمار	۱۹۶
ڈاکٹر ظہور دین	نیا اردو افسانہ چند نکات	۱۹۹
ڈاکٹر عبدالرزاق	گل ریز	۲۰۱
ڈاکٹر موسیٰ اقبال	غالب کی ایک غزل کا تجزیہ	۲۰۴
فردوس احمد نجار	حلقہ ارباب ذوق اور اردو افسانہ	۲۰۶
مجلس ادارت		۲۰۸

Scanned with OKEN Scanner

ہجرت کا المیہ اور اختر پیامی

امینہ خاتون

سیّد سعید اختر پیامی کا شمار ترقی پسند شعرا میں کیا جاتا ہے۔ انھوں نے اپنی عمر کا ایک بڑا حصہ جھارکھنڈ میں گزارا، انھوں نے رانچی کالج سے علم معاشیات میں بی اے آنرس کیا۔ کچھ دنوں تک آزاد اسکول اور مدرسے میں بچوں کو پڑھانے کا کام انجام دیا اور پھر تلخی حالات کے سبب انھیں اپنے وطن سے دور پاکستان جانا پڑا اور وہیں کی مٹی میں سپردِ خاک بھی ہوئے۔ انھوں نے بے حد فعال زندگی گزاری۔ وہ کمیونسٹ خیالات سے بہت متاثر تھے اور ترقی پسند تحریک کے بانی کی حیثیت سے جھارکھنڈ کی ادبی اور سیاسی تاریخ میں ہمیشہ یاد کیے جائیں گے۔ مارکسزم فکر و نظر سے وہ صرف متاثر ہی نہیں تاحیات وابستہ بھی رہے۔ انھیں کچھ عرصہ کلکتہ میں بہ سلسلہ ؟ ملازمت رہنے کا بھی موقع ملا۔ یہ زمانہ آزادیِ ہند سے کچھ پہلے اور بعد کا ہے۔ یہاں سے 'منزلیں' اور 'جھنکار' نام کے دو رسالے اور اخبار ان کی ادارت میں شایع ہوئے لیکن یہ دور پورے ملک میں فساد کا دور تھا اور کمیونسٹ پارٹی پر پابندیاں بھی عائد تھیں، اس لیے وہ کلکتے میں زیادہ عرصہ تک نہیں رہ سکے۔ دراصل ان کے والد محترم نے میڈیکل کی اعلا تعلیم حاصل کرنے کے لیے انھیں بھاگلپور بھیجا تھا لیکن وہ تعلیم انھیں راس نہ آئی اور اسے نامکمل چھوڑ کر وہ کلکتہ تشریف لے گئے۔ وہ انگریزی اور اردو کے اچھے مقرر تھے۔

آزادی کے بعد سے تقریباً 1960ء تک اختر پیامی کی تخلیقی زندگی جھارکھنڈ میں گزری۔ وہ 1962ء میں بی اے آنرس کرنے کے بعد معاشیات کی اعلا تعلیم کے لیے پٹنہ یونی ورسٹی چلے گئے، کیوں کہ اس وقت رانچی میں علم معاشیات میں ایم اے کی پڑھائی نہیں ہوتی تھی۔ کلام حیدری، انور عظیم، اَمر ہندی، وہاب دانش، ستیشور رائے، میزال رائے وغیرہ جیسے ترقی پسنداُن کے حلقہ ؟ احباب میں تھے۔ یہ تمام لوگ اپنے وقت کے دانش وروں میں شمار ہوتے تھے۔ علمِ معاشیات پر اختر پیامی کی نظر اتنی گہری تھی کہ 1952ء کے آس پاس انھوں نے چھوٹا ناگ پور اور اس کے معاشی مسائل پر ایک طویل پرچہ تیار کیا تھا۔ جسے اس وقت کے مشہور دانش ور اور ماہر معاشیات بابو گور کھ ناتھ نے غیر معمولی قرار دیا اور مرکزی حکومت کو غور وخوض کے لیے روانہ کر دیا۔ برسوں پہلے چھوٹا ناگ پور کے اقتصادی مسائل پر اُنھوں نے جو نتائج پیش کیے، اس سے ان کی غیر معمولی صلاحیت کا اندازہ ہوتا ہے۔

انگریزی زبان و ادب پر بھی اختر پیامی کی گہری نظر تھی۔ وہ اپنے وقت کے اچھے مقرر تسلیم کیے جاتے تھے۔ ان سب صفات نے انھیں سماجی ناہمواری کے خلاف بغاوت کی طرف راغب کیا۔ سیاست اور ترقی پسند تحریک انھیں بہار سے کلکتہ لے گئی۔ جہاں کچھ عرصہ تک انھوں نے چند پرچے اور اخبار نکالے مگر پھر اپنے والد کے حکم سے وہ رانچی واپس آگئے۔ یہیں انھوں نے اعلا تعلیم مکمل کی لیکن یہ بات ان کے ہم جماعتوں کو راس نہیں آئی اور ایک سازش کے تحت ان لوگوں نے انھیں اس بات کا یقین دلا دیا کہ اگر وہ ہندستان میں رہتے تو وہ گرفتار ہو جائیں گے، اس لیے ان کا پاکستان جانا ہی بہتر ہوگا۔

ایک مدت تک پاکستان میں ناگفتہ بہ حالات میں وقت گزارنے کے بعد جب وہ واپس لوٹے تو انھیں ہندستان میں بھی بڑی مشکلات کا سامنا کرنا پڑا۔ یہاں کی شہریت سے وہ خارج کیے جا چکے تھے، اس لیے انھوں نے نام دھاری سنگھ دنکر کے ذریعہ جواہر لال نہرو سے ملاقات کی۔ دنکر نے نہرو سے گزارش کی کہ اس لڑکے کی ہندستانی شہریت واپس کر دی جائے۔ نہرو نے اس بات کے پورا ہونے کا بھروسا بھی دلایا۔ افسروں کو اس کی ہدایت بھی دی مگر پیامی صاحب کے ساتھیوں نے انھیں اس کام کی پیچیدگیاں سمجھاتے ہوئے پھر سے انھیں پُرفریب سازشوں کا شکار بنا لیا اور وہ اس مرتبہ ڈھاکا پہنچ گئے۔ اس بار وہ انگریزی اخبار Morning News سے وابستہ ہو گئے۔ اس زبردستی کی جلا وطنی نے ان کی روح کو کافی تکلیف پہنچائی اور ان کے خاندان اور زندگی کو ایک ایسا زخم عطا کیا جس سے وہ تاحیات نجات حاصل نہ کر سکے۔ وہ لمحے بھر کے لیے بھی پاکستان میں خوش نہیں رہے۔ اس دور کی تمام نظموں کا بہ غور مطالعہ کیجیے تو ان کی حقیقت اور اس کرب کا اندازہ ہوگا۔ شاید ہجرت کا یہی المیہ ان کی زندگی اور اپنے بھائی بہنوں کی فرقت کا بھی المیہ بن گیا جس کا اشارا وہ اپنے چھوٹے بھائی جابر حسین کو خط میں بار بار کرتے رہے۔ جب کبھی وہ ہندستان آتے اور وداع ہونے کا وقت ہوتا تو لگتا کہ خاندان کے کسی فرد کی موت ہو گئی ہے۔ انھیں رخصت کرتے وقت ساری آنکھیں اشک بار ہو جاتیں۔

اختر پیامی کی زندگی میں کئی نشیب و فراز آئے لیکن ایک بات کا انھیں ہمیشہ قلق رہا کہ وہ اپنے بھائیوں سے جدا ہو گئے۔ اپنے اصل وطن ہندستان سے انھیں بے پناہ محبت تھی اور ان کے خاندان کے زیادہ تر افراد اب بھی ہندستان میں ہی مقیم ہیں۔ 1992ء میں وہ اپنے بچھڑے ہوئے عزیزوں سے ملنے کے لیے پٹنہ گئے۔ اس موقع پر انھوں نے یہ اشعار کہے تھے:

قصہ ؟ کاکل و رخسار لیے آیا ہوں
عشق کی گرمیِ بازار لیے آیا ہوں
مجھ کو سینے سے لگا لے مرے محبوبِ وطن
اپنا ٹوٹا ہوا پندار لیے آیا ہوں

اختر پیامی نے جب ہندستان سے بنگلا دیش کی ہجرت کی اور وہاں مشرقی اور مغربی پاکستان کا تنازعہ شروع ہوا تو انھوں نے پہلے ہندستان میں اپنی جان بچائی۔ بعد میں ہندستانی حکومت سے پوری کوشش کے باوجود شہریت نہ ملنے کی وجہ سے انھیں مایوس ہو کر مشرقی پاکستان یعنی موجودہ پاکستان کی جانب ہجرت کرنی پڑی۔ یہ ہی ان کا الم ناک سفر تھا جس کی روداد ہمیں ان کی شاعری میں بہت جذباتی انداز میں ملتی ہے۔ وہ خود اپنے انٹرویو میں ایک جگہ فرماتے ہیں:

''شاعری میرے نزدیک بھی الہام کا ایک درجہ رکھتی ہے۔ اسی لیے کبھی شاعر کو جادوگر بھی کہا گیا۔''

اختر پیامی کی زندگی کا یہی سب سے بڑا اور عظیم المیہ رہا کہ انھیں ہندستان سے پاکستان کی ہجرت کرنی پڑی۔ اس کی بہت سی وجوہات قابلِ ذکر ہیں۔ خاندان اور عزیز رشتہ داروں کے دھوکے اور ان کی سازشوں کے جال نے انھیں توڑ کر رکھ دیا۔ انھوں نے زندگی کا طویل حصہ سیاست کو دیکھتے اور سمجھتے ہوئے گزارا تھا لیکن

Scanned with OKEN Scanner

انھیں یہی افسوس رہا کہ ان کے اپنوں کی سازشوں کا وہ وقت رہتے سُراغ نہ لگا سکے۔ دوستوں نے بھی ان کو دھوکا دیا اور ان کو اپنے وطن سے دور کرنے اور ملک بدر کرنے میں کوئی کسّر نہ چھوڑی۔ وہ یہاں سے پہلے بنگلا دیش گئے پھر پاکستان لیکن کسی جگہ انھیں قرار نہ آیا:

اب تو گھبرا کے یہ کہتے ہیں کہ مر جائیں گے
مر کے بھی چین نہ پایا تو کدھر جائیں گے

اسی وجہ سے وہ ایک لمحے کے لیے ہجرت کے بعد کی زندگی چین سے نہ بتا سکے۔ ان کی شخصیت کا سب سے کمزور پہلو لکھنے والوں کی نظر میں ان کا بزدل ہونا تھا۔ ان کے ناقدین حیرت زدہ ہیں کہ کس طرح ایک انسان اور شاعر جس نے زندگی بھر انقلاب اور ظلم و ستم کے خلاف صدائے احتجاج بلند کی، ایک فعال اور متحرک زندگی کا مالک رہا، اسے کس طرح وہ اپنی خاندانی روایات اور بزرگوں کے ظلم اور جبر کے خلاف کسی ردِ عمل سے قاصر رہا۔ ان ظلموں کے خلاف نہ تو اس نے کوئی احتجاج کیا اور نہ کوئی آواز اُٹھائی۔ شاید اس کی وجہ اپنے خاندان والوں سے ان کی محبت رہی ہو۔ اسی سبب سے وہ تمام چیزوں کو برداشت کرتے رہے اور غم و غصے کو اپنے وجود کے اندر ہی ضم کر لیا اور اُف تک نہ کیا۔ یہ اختر پیامی کی زندگی کا ایک عجیب و غریب پہلو مانا جاتا ہے۔ اس بات کی تصدیق کے لیے میں ایک اقتباس پیش کرنا چاہوں گی:

''میں نے ہنگامہ خیز زندگی گزاری ہے۔ ادب اور سیاست میں فعال کردار ادا کیا ہے۔ میں تنگ نظری کا شکار نہیں رہا۔ محبت، رواداری اور خلوص کے جذبے نے ہمیشہ میری رہ نمائی کی۔ میں کسی سے نفرت نہیں کر سکتا۔ میں اپنے بدترین دشمن کو بھی معاف کرنے کی صلاحیت رکھتا ہوں۔'' (کلس)

تقسیم ہندستان کا قصہ اردو ادیبوں اور شاعروں کے لیے ہنگامہ خیز موضوع رہا ہے۔ اس نے قرۃ العین حیدر کو جنم دیا اور افسانوی ادب کا ایک بڑا ذخیرہ پیدا کیا جس کی مثال ہندستان کی دوسری زبانوں میں نہیں ملتی۔ ہمیں یہ نہیں بھولنا چاہیے کہ تقسیم ہند کے الم ناک اثرات جتنی شدت سے برصغیر کے مسلمانوں پر پڑے، وہ کہیں اور نہیں دکھائی دیتے۔ بہار، یوپی اور مدھیہ پردیش کے مسلمانوں نے ابھی تقسیم کے الم ناک نتائج کو فراموش نہیں کیا تھا کہ بنگلہ دیش کا سانحہ ہو گیا۔ اسی کے ساتھ اختر پیامی کی ہجرت کا دوسرا المیہ بھی شروع ہوتا ہے۔ اردو اور ہندی بولنے والے علاقوں سے جو آبادی بنگلا دیش گئی تھی، وہ تباہ ہو گئی۔ لاکھوں افراد وہاں آج بھی کسمپرسی کی زندگی گزار رہے ہیں۔ میں ہجرت کے المیے کو انتظار حسین اور حسن عسکری کی آنکھ سے نہیں دیکھتی۔ یہ وحشت ناک تاریخی مذہبیت کا دور تھا جس کی زد میں لاکھوں معصوم انسان آ گئے۔ ہجرت اور فسادات پوری بیسویں صدی کے ہندستانی مصنفین کی تخلیق کے سب سے بڑے محرک بنے۔ اختر پیامی بھی دوسروں کی طرح اس سانحے کو کبھی بھول نہیں سکے۔ اس سلسلے میں انہوں نے اپنے چھوٹے بھائی اور بہنوں کے نام جو خطوط لکھے، اس پر ایک نظر ڈالنا ضروری ہے۔ میں ان کے مختصر اقتباسات اس لیے پیش کر رہی ہوں جن سے ان کی شاعری کے بنیادی محرکات سامنے آ سکیں:

''میں کتنا بدنصیب آدمی ہوں کہ اپنے پیارے بھائی بہنوں سے دور جلا وطنی کی زندگی گزارنے پر مجبور ہوں۔ تم مجھے زندہ رکھنے کی کوشش کیوں کر رہے ہو میری موت تو پچاس سال قبل واقع ہو چکی۔ اب تو ہڈیوں میں بھی دم نہیں رہا۔ تم نے 'تاریخ' کی اشاعت میں کتنی دل چسپی لی ہے اس پر میں حیران ہوں۔ تم نے میرے متعلق جتنا کچھ لکھا ہے اس سے تمھاری محبت جھلکتی ہے۔ میری تنہائی مجھے کہاں لے جائے گی۔'' (جابر حسین کے نام ایک خط، کلس)

''میں آج صبح ناشتے کی میز پر تمھاری بھابھی جان کو اپنے ان خوابوں کے بارے میں بتا رہا تھا جو متواتر میری راتوں کی نیند اڑا دیتے ہیں۔ میں چونک چونک کر اٹھ جاتا ہوں اور پھر مسلسل جاگتا رہتا ہوں۔ میں اکثر یہ خواب دیکھتا ہوں کہ میں تنہا ہوں، اور بار بار یہ احساس ہوتا ہے کہ میری کوئی بہت ہی ضروری اور عزیز شے چھوٹ گئی ہے اور پریشانی کے عالم میں بیدار ہو جاتا ہوں۔ خدا جانے اس کا نفسیاتی تجزیہ کیا ہو مگر کیا یہ حقیقت نہیں ہے کہ میرا سب سے قیمتی اثاثہ تو تم لوگ تھے، میرے پیارے بھائی اور مجھ سے بے انتہا محبت کرنے والی بہنیں۔ تم سب کا مجرم ہوں۔ ایسی زندگی کس کام کی جب انسان اپنے پیاروں سے دور ہو جائے۔ میری خواہش اور آرزو یہی ہے کہ ایک مرتبہ تم لوگوں سے ملنے آ ؤ؟ں۔ تم لوگ میری کتاب کیوں شائع کرنا چاہتے ہو، میں تو یہ چاہتا تھا کہ میری موت کے بعد ہوتا، بہتر تھا۔''

14? جون 1998ء کو انھوں نے ایک اور خط جابر حسین کو لکھا:

''اب تو ایسا معلوم ہوتا ہے کہ تم اور صرف تم میرے اور میرے عزیزوں اور دوستوں کے درمیان رابطے کی علامت ہو۔ تم کبھی کبھی فون کر لیتے ہو اور تمھارے خلوص اور محبت میں ڈوبی ہوئی آواز میرے وجود کو جھنجھوڑ دیتی ہے۔ میری آنکھیں بھیگ جاتی ہیں اور ماضی کی بھول بھلیوں میں تمھیں تلاش کرنے لگتا ہوں۔ تمھیں پکارتا ہوں مگر تم میری آواز نہیں سن سکتے ہو۔ میرے اور تمھارے درمیان تو حقائق کی تلخیاں ہیں۔ میں ہوں یا تم ایک بلند اور بلند دیوار کو کیسے ڈھا سکتے ہیں۔''

اپنی بہن ذیشان فاطمی کے نام ایک خط میں پیامی لکھتے ہیں:

''تم لوگوں سے ملے ہوئے 6 سال ہو گئے۔ ایسی بے یقینی کی فضا ہے کہ کسی شے کا اعتبار نہیں۔ اب زندگی میں مہلت بھی ہے یا نہیں۔ کتنا جی چاہتا ہے کہ تم لوگوں سے ملوں۔ تمھاری محبت اور شفقت بھری نظروں کو اپنے وجود میں جذب کر لوں تا کہ اچھی یادوں کے ساتھ زندگی بقیہ گزار سکوں۔ میں بہت مظلوم ہوں، مجھ پر بہت ظلم ہوئے ہیں اور اب میری قوتِ برداشت جواب دے چکی ہے۔ کوئی نہیں جانتا کب چراغ گل ہو جائے۔ موت کے گھپ اندھیرے میں چہرے نظر نہیں آتے۔ مجھے یہ غم کھائے جاتا ہے کہ میں تم لوگوں کے لیے کچھ نہیں کر سکا۔'' (کلس)

یہی وجہ ہے کہ انھوں نے ہجرت کے بعد بھی اپنے خاندان والوں سے زیادہ ربط رکھنا مناسب نہیں سمجھا اور ہندستان سے بالکل لاتعلق ہو کر آ؟خری زندگی گزار دی۔ ان تمام تر دل دوز تفصیلات سے یہ اندازہ لگانا مشکل نہیں کہ ہجرت اور اس کے مصائب نے اختر پیامی کو باطنی طور پر کافی متاثر کیا۔ لیکن انھوں نے اس کے باوجود بڑی ہمت سے ان مصائب کا مقابلہ کرتے ہوئے زندگی گزاری اور صحافتی و تخلیقی کاموں میں لگے رہے۔ ان کے کلام اور خطوط میں جگہ جگہ اس کے نقوش مل جاتے ہیں۔ ضرورت اس بات کی ہے کہ اِن باتوں کو ان کی تخلیقات سے جوڑ کر دیکھا جائے اور ان کی قدر شناسی کا حق ادا کیا جائے۔

KHATOONAMEENA
Research Scholar, Dept. of Urdu,
Nilamber Pitamber University, Medininagar, Palamu
1989ameenakhan@gmail.com,:Email
8809526804:Mob
ری سرچ اسکالر، شعبۂ اردو، نیلامبر پتامبر یونی ورسٹی، میدنی نگر، پلامو

Scanned with OKEN Scanner